NOTIFICATION NO: 591/2025

DATE OF AWARD: 30.12.2025

NAME OF SCHOLAR: NITIN NARANG

NAME OF SUPERVISOR: PROF.NEERAJ KUMAR

NAME OF DEPARTMENT: HINDI

TOPIC OF RESEARCH: MOHAN RAKESH KE NATYA CHARITRON KA MANOVAIGYANIK ADHYAYAN

FINDINGS

रचनात्मक अभिव्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विवेचन सौंदर्यबोध, समाजशास्त्र, राजनीति, परंपरा, जीवन–यापन इत्यादि के सापेक्ष हमारे कलात्मक बोध को समृद्ध करता है। रचना और रचनाकार ही नहीं बल्कि इनके ज़रिए संप्रेषित हो रहे किरदारों पर भी मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार किए जाने का विशेष महत्व है। साहित्यिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण अंग है – चरित्र–चित्रण। कथाकृतियों की परिकल्पना तो चरित्रांकन के बिना असंभव है। साहित्यिक चरित्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन मानवीय अस्तित्व के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है। यह रचनात्मक अभिव्यक्ति को लेकर हमारी समझ में भी नए आयाम जोड़ता है।

नाट्य–रचनाओं में तो कथात्मक संप्रेषण का दायित्व मूलतः चरित्रों पर ही रहता है। किरदारों के संवाद और क्रियाकलाप ही नाट्यालेख की संरचना को साकार करते हैं। संवादों और क्रियाकलापों से उभरते चरित्रों के मनोविज्ञान में ही नाट्य–रचनाओं का कथ्य निहित होता है। संवाद–दर–संवाद शक्ल लेते कथानक के सापेक्ष चरित्रों का व्यक्तित्व आकार लेता है। नाटक की संरचना, सार्थकता और कलात्मकता में चरित्रों के महत्व को बखूबी उजागर करता है – बतौर नाटककार मोहन राकेश द्वारा गढ़े गए किरदारों का मनोवैज्ञानिक विवेचन। इन चरित्रों की मनोरचना आधुनिक अस्तित्व के विसंगत यथार्थ का प्रभावशाली अंकन है।

मोहन राकेश के नाट्य–चरित्रों की मारफ़त यह समझा जा सकता है कि आधुनिक अस्तित्व हमारे सामूहिक अवचेतन को किस तरह से उद्वेलित करता है। वरण, निर्वासन, व्यर्थता, आत्मघात सरीखे मानसिक रुझान आधुनिक अस्तित्व की देन हैं। पश्चिमी देशों में इनका एक परिप्रेक्ष्य रहा है, जो कि वहाँ की वास्तविकता से संबंधित है। जबकि अपने यहाँ इनकी अलग पृष्ठभूमि है, जिसका संबंध हमारे यथार्थ और अस्तित्व से है। दरअसल, मोहन राकेश के नाट्य–चरित्रों का अस्तित्वपरक अंतःकरण इनकी अपनी परिस्थितियों से जुड़ा है। लिहाज़ा यह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत हद तक आश्वस्त करता है। ऐसे में ये किरदार बेहद मार्मिक, असरदार और अपने लगते हैं। इस सबके चलते इन चरित्रों की मानसिकता का बारीकी से संज्ञान लेना ज़रूरी हो जाता है। यह हमारे अस्तित्व में निहित विडंबनाओं से

हमें रूबरू कराता है। इससे राकेश के नाटककार को लेकर हमारी समझ भी विकसित होती है।

विश्वयुद्धों से उपजे संत्रास की बनिस्बत अपने यहाँ अस्तित्व का संघर्ष आत्मीय संघर्षों में प्रतिबिंबित होता है। आत्मीय धरातल पर व्यक्ति जिन संबंधों को जीता है, उनमें महसूस हो रही नई चुनौतियों की राकेश द्वारा रचे गए नाट्य–चरित्रों का व्यक्तित्व गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लिहाज़ा इन चरित्रों के ज़रिए साकार होता परिदृश्य हमारे सामूहिक अवचेतन में बसे एक जान–पहचाने आद्यबिंब की ओर ध्यान खींचता है। यह 'घर' का आद्यबिंब है।

मोहन राकेश की आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति में वे उतार–चढ़ाव दर्ज हैं, जिनसे उबरने की रचनात्मक चेष्टा उन्हें 'घर' के आद्यबिंब तक ले जाती है। उनका आत्मकथात्मक लेखन यह सिद्ध करता है कि अस्तित्व को लेकर उनके किरदारों की छटपटाहट बनावटी अथवा आयातित नहीं बल्कि मौलिक और नैसर्गिक है। उनके नाटकों में आए सभी प्रमुख चरित्रों को उस ज़िंदगी में दर्शाया जा सकता है, जिसे राकेश ने जीया है। किसी किरदार में राकेश की मनोरचना का प्रतिबिंब साफ़ दिखाई देता है तो कोई उस व्यक्ति के अक्स लिए है, जिससे अपने संबंधों को लेकर वे एक अरसे तक रोज़–बरोज़ जूझे। वैयक्तिक धरातल पर मोहन राकेश के आत्मीय ही नहीं बल्कि जो लोग उन्हें अखरते रहे, वे भी लेखक द्वारा गढ़े गए किरदारों में दिख जाएँगे। लेकिन बतौर नाटककार राकेश ने अपने चरित्रों के प्रति वस्तुनिष्ठता का भलीभाँति निर्वाह किया है। ऐसा लगता है कि मानो वे हर एक किरदार को उसी की शर्तों पर बरतते हैं।

बतौर नाटककार राकेश के सभी प्रमुख चरित्र मुकम्मल व्यक्तित्व सिद्ध हुए हैं। यह इन चरित्रों को रचनात्मक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बेहद विचारोत्तेजक बना देता है। नाटककार की हैसियत से राकेश द्वारा रचा गया हर किरदार अपनी ही तरह का एक व्यक्तित्व लिए है। कहना न होगा कि एक के जैसा दूसरा चरित्र राकेश की नाट्य–रचनाओं में नहीं खोजा जा सकता। यह चरित्र विशेष के मनोविज्ञान का रचनात्मक दोहन है कि राकेश की नाट्य–कृतियों से जुड़े सहायक चरित्र भी कथानक का अभिन्न अंग जान पड़ते हैं। पूर्णकालिक नाटकों से इतर मोहन राकेश द्वारा किए गए अन्य नाट्य–प्रयोगों में भी कई चरित्र आधुनिक मनोरचना की बेहद सार्थक और प्रभावशाली अभिव्यक्ति लिए हैं।

दशकों से मोहन राकेश के बहुमंचित नाटककार होने का अच्छा–खासा श्रेय उनके द्वारा रचे गए चरित्रों को जाता है। इनकी बोलचाल और हरकतें रंगमंचीय संप्रेषण का अपना ही एक मुहावरा गढ़ती हैं, जिसे संवादों और क्रियाकलापों में मौजूद सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता व विसंगत प्रयोगों के मनोवैज्ञानिक विवेचन द्वारा समझा जा सकता है। इस संदर्भ में शब्दों का क्रम, क्षणिक मौन, अधूरे संवाद, दीर्घ स्वगत कथन का संज्ञान लेना भी बहुत ज़रूरी है। नाट्य–रचनाओं के स्थिर किंतु सारगर्भित दृश्यबंध भी चरित्रों की मनोरचना के प्रतिबिंब लिए हैं।